SSLC EXAMINATION 2023 HINDI ANSWER KEY

1. गंगी का ।

2. **पटकथा (गंगी जोखू को पीने केलिए पानी देती है)**

स्थान - एक झोंपडी के अंदर ।

समय - दोपहर के दो बजे ।

पात्र - 1. गंगी, 40 साल की औरत, धोती और चोली पहनी है ।

2. जोखू, 50 साल का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।

दृश्य का विवरण - प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद -

जोखू - बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।

गंगी - अभी लाती हूँ ।

जोखू - (लोटा मुँह से लगाकर) यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?

गंगी - दूर के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?

जोखू - मारे बास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !

गंगी - (लोटा नाक से लगाकर) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।

जोखू - (थोडी देर बाद) प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी - मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ ।

जोखू - दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी - ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ?

जोखू - हाथ-पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।

गंगी - आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।

जोखू - ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

3. वह + के = उसके

4. कलाम के दोस्त रणविजय को स्कूल में हिंदी भाषण प्रस्तुत करना है । लेकिन उसकी हिंदी उतनी अच्छी नहीं है । इसलिए उसकी मदद करने केलिए कलाम भाषण लिखकर देता है ।

5. **वार्तालाप - कलाम और रणविजय के बीच (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)**

कलाम - क्या हुआ दोस्त ? परेशान क्यों हो ?

रणविजय - कल स्कूल में हिंदी भाषण देने को कहा है ।

कलाम - वह अच्छी बात है न ?

रणविजय - पर तुम जानते हो न, मेरी हिंदी अच्छी नहीं है ।

कलाम - अरे छोडो यार ... मैं हूँ न ? मैं तुझको भाषण लिख दूँगा ।

रणविजय - तुम ? तुम कैसे लिखोगे ?

कलाम - तुम्हें अपने दोस्त पर भरोसा है न ? मैं लिख लूँगा ... पक्का ।

रणविजय - पर दोस्त ... मुझे कल तक भाषण चाहिए ।

कलाम - चिंता मत करो । रात को लिखकर सुबह दे दूँगा ।

रणविजय - ठीक है यार ।

अथवा

रपट तैयार करें

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : --------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया । ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

6. मशहूर

7. चार्ली गीत गाने लगा।

8. **सही मिलान करें।**

मैनेजर चार्ली को	- मंच पर लाया।
माँ की आवाज़ फटकर	- फुसफुसाहट में बदल गई।
चार्ली ने गीत गाना	- शुरू कर दिया।
धुन के अनुसार	- गाना सज गया।

9. खेल घंटी के बाद

10. बच्चे सुरेंदर जी से डरते थे।

11. **वाक्य पिरामिड की पूर्ति करें।**

* बच्चे आते हैं।
* बच्चे कक्षा में आते हैं।
* बच्चे कक्षा में **समय पर** आते हैं।
* बच्चे **गणित की** कक्षा में समय पर आते हैं।

12. अविनाश ने

13. गालिब की ग़ज़ल

14. **अविनाश की डायरी (नाव यात्रा)**

तारीख : ....

आज रात को मैंने अपने मित्र मोहन राकेश के साथ नाव लेकर भोपाल ताल की यात्रा की। नाव का मल्लाह था अब्दुल जब्बार। सर्दी में भी वह केवल एक तहमद पहनकर नाव खे रहा था। मेरे अनुरोध पर मल्लाह ने ग़ज़ल गाना शुरू किया। कितना मीठा था उनका स्वर ! सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। नाव खेते हुए वे झूम-झूमकर अत्यंत भावुकता से ग़ज़लें सुना रहे थे। उसके गायन ने हमें किसी दूसरी दुनिया में पहुचा दिया। रात की चाँदनी, सर्दी, शांत वातावरण, झील की विशालता आदि के साथ मल्लाह की गज़लें यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया। सर्दी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मैंने अपना कोट उतारकर उसको दे दिया। उस कोट पहनकर फिर उसने गालिब की एक गज़ल भी सुनाई। कुछ देर और सैर करके ही हम लौटे। मित्र केलिए यह यात्रा एक अलग अनुभव ही था। मल्लाह की गज़लें अब भी कानों में गूँज रही हैं। आज की यह अविस्मरणीय नाव यात्रा और मल्लाह की ग़ज़लें जीवन भर मन में रहेगा।

अथवा

यात्रा के बारे में लेखक का पत्र

स्थान: ....
तारीख.....................................

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? वहाँ तुम्हारी क्या-क्या समाचार हैं ? मैं अब मित्र अविनाश के साथ भोपाल में हूँ। सकुशल मैं यहाँ पहुच गया।

स्टेशन पर मेरे मित्र अविनाश आया था। एक दिन उसके साथ रहने का निर्णय लिया। रात को हमने झील की सैर करने को सोचा। ग्यारह बजे निकले। एक नाव मिल गई। उसमें घूमने लगे। बहुत-ही सुंदर लग रही थी। तभी अविनाश की इच्छा हुई कि कोई कुछ गाए। मैं गा नहीं सकता था। आखिर मल्लाह गाने को तैयार हुए। वे कुछ गज़लें सुनाने लगे। बहुत मीठा था उनका स्वर। रात के साथ ठंड भी बढने लगी। लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ। कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे।

अगली बार तुम भी मेरे साथ आओ। ऐसी यात्राएँ बहुत ही आकर्षक होती है। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

SREEJITH R, KOOLOOR VARKALA SCRIPS

15. सारे

16. **कवितांश का आशय (क्या सारे मैदान, ... हस्बमामूल)**

प्रस्तुत पंक्तियों आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री. राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

बडे सबेरे ही काम पर चलनेवाले बच्चों को देखकर कवि आशंकित होते हैं कि क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन एकाएक नष्ट हो गए हैं ? एसलिए बच्चे काम पर जा रहे हैं। अगर ऐसा है तो इस दुनिया में फिर क्या बचा है ? यह कितना भयानक स्थिति है ? भयानक होने पर भी छोटे-छोटे बच्चे अब भी काम केलिए जा रहे हैं। यह तो एक मामूली बात बन गई है। बालश्रम कानूनी अपराध होने पर भी कुछ बच्चे काम करने केलिए विवश हो गए हैं। उन्हें पढने का अवसर प्रदान करना सबका दायित्व है।

बालश्रम के विरुद्ध आवाज़ उठाने की प्रेरणा देनेवाली यह कविता बिलकुल प्रासंगिक और अच्छी है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

17. गुठली भैया से कहती है।

18. घरवाले गुठली को पराई मानकर उससे व्यवहार करते थे। लडकी केलिए जन्मगृह पराया है तो लडके केलिए अपना होगा। तो उस घर का देखभाल करना लडके का ही यानी भाई का ही दायित्व है।

19. **पोस्टर (संदेश) - लडका-लडकी का समान अधिकार है।**

लडका-लडकी का समान अधिकार है।

तोड दो पुराना विश्वास

नये सोच अपनाओ।

लडका - लडकी बराबर है

सब पढें ... सब बढें ...।

परिवार में लडका-लडकी का समान अधिकार दो।

बेटी बचाओ ... बेटी पढाओ ...।

जनवरी 24, राष्ट्रीय बालिका दिवस

बेटी है तो कल है ...

मत छीनो इनका अधिकार।

- बालिका सेवा समिति, केरल

अथवा

टिप्पणी - असमानता समाज का अभिशाप

भारतीय संविधान के अनुसार लडके-लडकियों को समानता का अधिकार है। लेकिन लडकियों को अकसर भेदभाव सहना पडता है। यह आज के समाज की बडी समस्या है। लडकी को जन्म से लेकर अंत तक घर का काम करना पडता है। सभी कहते हैं कि ससुराल ही लडकियों का असली घर है। इसलिए उसे अपने घर में अन्य होने का अनुभव होता है। समाज में हो या परिवार में हो लडकों के समान लडकियों को उचित स्थान नहीं मिलता है। समाज में भी यही भेदभाव हम देख सकते हैं। उसे स्वतंत्र रूप से चलने का अधिकार भी नहीं है। उन्हें लडकों के जैसे पढाई की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं। आज नारी समाज के सभी क्षेत्रों में कर्मरत हैं। उसे समाज से अलग रखना उचित नहीं है। गर्भ में ही लडकियों की हत्या करने का निर्मम व्यवहार भी कभी-कभी चलता है। यानी वे लडकियों को जन्म देना भी नहीं चाहते। लजकियों के प्रति हीन भाव रखना ठीक नहीं है। लडका-लडकी एक जैसा है। लडकियों को समानता का अधिकार मिलना चाहिए।